

४. मन

(पूरक पठन)

-विकास परिहार

परिचय

जन्म : १९८३, गुना (म.प्र.)

परिचय : विकास परिहार ने २००० से २००६ तक भारतीय वायुसेना को अपनी सेवाएँ दीं फिर पत्रकारिता के क्षेत्र में उतरने के बाद रेडियो से जुड़े। साहित्य में विशेष रुचि होने के कारण आप नाट्य गतिविधियों से भी जुड़े हुए हैं।

पद्य संबंधी

हाइकु : यह जापान की लोकप्रिय काव्य विधा है। हाइकु विश्व की सबसे छोटी कविता कही जाती है। पाँचवें दशक से हिंदी साहित्य ने हाइकु को खुले मन से स्वीकार किया है। हाइकु कविता ५+७+५=१७ वर्ण के ढाँचे में लिखी जाती है।

प्रस्तुत हाइकु में कवि ने अपने अनुभवों और छोटी-छोटी विभिन्न घटनाओं को अर्थवाही सीमित शब्दों में प्रस्तुत किया है।

घना अँधेरा
चमकता प्रकाश
और अधिक।

करते जाओ
पाने की मत सोचो
जीवन सारा।

जीवन नैया
मँझधार में डोले,
सँभाले कौन ?

रंग-बिरंगे
रंग-संग लेकर
आया फागुन।

काँटों के बीच
खिलखिलाता फूल
देता प्रेरणा।

भीतरी कुंठा
आँखों के द्वार से
आई बाहर।

खारे जल से
धुल गए विषाद
मन पावन।

मृत्यु को जीना
जीवन विष पीना
है जिजीविषा।



मन की पीड़ा
छाई बन बादल
बरसीं आँखें ।

चलतीं साथ
पटरियाँ रेल की
फिर भी मौन ।

सितारे छिपे
बादलों की ओट में
सूना आकाश ।

तुमने दिए
जिन गीतों को स्वर
हुए अमर ।

सागर में भी
रहकर मछली
प्यासी ही रही ।

— ० —

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

अ		आ
मछली	-----	मौन
गीतों के स्वर	-----	सूना
रेल की पटरियाँ	-----	प्यासी
आकाश	-----	अमर
		पीड़ा

(२) परिणाम लिखिए :

१. सितारों का छिपना -
२. तुम्हारा गीतों को स्वर देना -

(३) सरल अर्थ लिखिए :

मन की ----- बरसीं आँखें ।

शब्द संसार

मँझधार स्त्री.सं.(हिं.) = नदी के प्रवाह का मध्यभाग

कुंठा स्त्री.सं.(सं.) = घोर निराशा

विषाद पुं.सं.(सं.) = अभिलाषा पूरी न होने पर मन में होने वाला खेद या दुःख

जिजीविषा स्त्री.सं.(सं.) = जीवन के प्रति आसक्ति/जीने की इच्छा

ओट स्त्री.सं.(सं.) = आड़

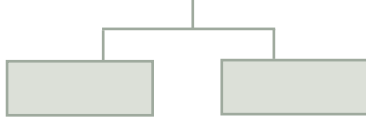
* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) लिखिए :

निम्नलिखित हाइकु द्वारा मिलने वाला संदेश	
करते जाओ पाने की मत सोचो जीवन सारा ।	भीतरी कुंठा नयनों के द्वार से आई बाहर ।
-----	-----
-----	-----
-----	-----

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

हाइकु में प्रयुक्त महीना और उसकी ऋतु



(३) उत्तर लिखिए :

१. मँझधार में डोले -----
२. छिपे हुए -----
३. धुल गए -----
४. अमर हुए -----

(४) निम्नलिखित काव्य पंक्तियों का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए :

१. चलतीं साथ
पटरियाँ रेल की
फिर भी मौन ।

२. काँटों के बीच
खिलखिलाता फूल
देता प्रेरणा ।



उपयोजित लेखन

वक्तृत्व प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने के उपलक्ष्य में आपके मित्र/सहेली ने आपको बधाई पत्र भेजा है, उसे धन्यवाद देते हुए निम्न प्रारूप में पत्र लिखिए :

दिनांक :

संबोधन :

अभिवादन :

प्रारंभ :

विषय विवेचन :

तुम्हारा/तुम्हारी,

.....

नाम :

पता :

ई-मेल आईडी :



BN7VQP